सान्ध्य कीर्त्तन

१

श्रीश्रीमातृका-ध्यान

(प्रभाती कीर्त्तन द्रष्टव्य है)

२

भजन

(जय)हृदय-वासिनी शुद्धा सनातनी (श्री) आनन्दमयी माँ।
भुवन उज्ज्वला जननी निर्मला पुण्य-विस्तारिणी माँ॥
राजराजेश्वरी स्वाहा स्वधा गौरी प्रणव-रूपिणी माँ।
सौम्या सौम्यतरा सत्या मनोहरा पूर्णपरात्परा माँ॥
रविशशिकुण्डला महाव्योमकुन्तला विश्वरूपिणी माँ।
ऐश्वर्य्यभातिमा माधुर्य्यप्रतिमा महिमामण्डिता माँ॥
रमा-मनोरमा शान्ति-शान्ता-क्षमा सर्वदेवमयी माँ।
सुखदा वरदा भकति-ज्ञानदा कैवल्यदायिनी माँ॥
विश्व-प्रसविनी विश्व-पालिनी विश्व-संहारिणी माँ।
भक्त-प्राणरूपा मूर्त्तिमती कृपा त्रिलोकतारिणी माँ॥
कार्य्यकारणभूता भेदाभेदातीता परमदेवता माँ।
विद्याविनोदिनी योगिजनरञ्जिनी भवभयभञ्जिनी माँ॥
मन्त्रबीजात्मिका वेद-प्रकाशिका निखिलव्यापिका माँ।
सगुणा सरूपा निर्गुणा नीरूपा महाभावमयी माँ॥
मुग्ध चराचर गाहे निरन्तर तव गुणमाधुरी माँ।
(मोरा) मिलि प्राणे प्राणे प्रणमि श्रीचरणे जय जय जय माँ॥

डाको, माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ।
बलो, भजो, जपो, गाहो माँ माँ माँ॥

३

जय शिव शङ्कर बम् बम् हर हर।

४

हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल।

५

प्रणाम मन्त्र

(प्रभाती कीर्त्तन द्रष्टव्य है)

■